“अखिलेश के कथा–साहित्य में प्रगतिशील चेतना का अध्ययन”

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़,
आगरा की हिन्दी विषय में पी–एच.डी.
की उपाधि हेतु शोध विषय की प्रस्तावित

रूपरेखा

2015

निर्देशिका :– **अनुसन्धित्सु**
–

डॉ. कमलेश कुमारी रवि
एसो.प्रो. हिन्दी विभाग
एम.ए. हिन्दी, इतिहास, बी.एड.
पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा–पत्रकारिता
एवं पी–एच.डी.
क्ला संकाय, डी.ई.आई.,
दयालबाग, आगरा।

प्रीति
एम.ए.बी.एड.
कला संकाय

हिन्दी विभागाध्यक्ष **कला संकाय प्रमुख**

प्रो. शर्मिला सक्सेना **प्रो. रागिनी रॉय**

कला संकाय
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा–282005

“अखिलेश के कथा–साहित्य में प्रगतिशील चेतना का अध्ययन”

शोध–परिचय –

मानव के रूचि–रूझान की भिन्नता ने साहित्य में विविध विधाओं को जन्म दिया है। साहित्य की इन विविध विधाओं में उपन्यास तथा कहानी का महत्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य जीवन के आरम्भ से कथा कहने सुनने की प्रवृत्ति रही है।

‘कथा–साहित्य’ मानव जीवन से सम्बन्धित होते है। कथा–साहित्य में रचनाकार अपनी युगीन चेतना से प्रेरित होकर साहित्य की रचना करता है। युगीन बोध जब लेखक एवं कवि चेतना से संयुक्त अपने संप्रेषित स्वरूप में लोक चेतना से जुड़ जाता है तभी श्रेष्ठ साहित्य का निर्माण होता है। कथा–साहित्य में समाज की ठोस वास्तविकताओं, चरित्रों, घटनाओं और माध्यम से इस तरह उभरती हैं कि हम अपने सामने मौजूद समाज को कहानी में मौजूद समाज से मिलाते चलते है, दोनों को साथ और समान्तर रखकर देखने की यह प्रक्रिया कहानी और उपन्यास पाठ–प्रक्रिया में एक रचनात्मक आयाम को जोड़ती है।

प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा एवं चयन –

प्रगतिशील साहित्य वह साहित्य हैं जो हमेशा जनता का सहयात्री बनकर आम–आदमी के सुख–दुख से ऊर्जा ग्रहण करके समाज को तथा व्यक्ति को प्रगति की दिशा–निर्देश करता रहता है। हिन्दी में प्रगतिशील साहित्य मनुष्य को मनुष्य रूप में जीने के अधिकार के लिए लड़ने वाला साहित्य है, जिसके मूल में अनेक तत्व विद्यमान हैं।

प्रगतिशील साहित्य समाज के समग्र विकास को लक्ष्य करता है तथा मनुष्य को उत्तरोत्तर मानवीयता से सम्पन्न बनाता है इसलिए साहित्य की प्रगतिशीलता का समाज पर शुभाशुभ प्रभाव उपस्थित रहता है। प्रगतिशील साहित्य में साहित्य का और साहित्य का

समाज पर प्रभाव पड़ता है, इसलिए रचनाकार के लिए रचना एक सशक्त माध्यम है। जिससे वह समाज को बदलना चाहते हैं वे ऐसे साहित्य की माँग करते है। जो एक ओर कलात्मक उपेक्षा न करें तथा दूसरी ओर व्यक्ति और समाज के विकास में अनिवार्य भूमिका निभायें। हिन्दी का प्रगतिशील साहित्य सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, साहित्यिक परिस्थिति की उपज हैं।

अखिलेश जी का समकालीन कथाकारों में महत्वपूर्ण स्थान हैं। आप एक वरिष्ठ कथाकार के रूप में जाने जाते हैं। आपका कथा–साहित्य मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग को केन्द्र में रखकर लिखा गया हैं। आपका कथा–साहित्य मानव जीवन के अधिक निकट दिखाई देता हैं। जिसमें मानव के विघटित होते हुए मूल्य, रिश्तों में आती अर्थकेन्द्रिता, सांप्रदायिकता, दलित–विमर्श, स्त्री–शोषण, राजनीतिक छल–छदम्, युवा मन की भटकन, युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी, युवाओं का राजनीति के प्रति बढ़ता आकर्षण, भ्रष्टाचार, अनैतिकता आदि समस्याओं को उजागर किया है। आपके कथा–साहित्य में व्यक्तिवाद का प्रभाव देखने मिलता है, जिसमें समूह चेतना को जगह नहीं मिलती है। आपके कथा साहित्य में समय के साथ समाज में बढ़ रहा बाजारवाद तथा भूमण्डलीकरण को भी रेखाकिंत किया गया है।

अखिलेश जी के कथा–साहित्य में प्रगतिशील समाज के बदलते हुए स्वरूप के साथ भाषा की विलक्षणता भी देखने को मिलती है। आपके कथा–साहित्य में भाषा बिम्बों के सहारे चित्रों के रचाव वाली भाषा का प्रयोग हैं। अखिलेश जी के कथा–साहित्य मेंभाषा शब्दों के साथ खेलती हुई दिखाई देती हैं। इनकी भाषा में जो हल्का व्यंग्य विनोद है, वह समय, सत्ता और नए जीवन की विद्रूपताओं के रेशे–रेशे को उखाड़ देती हैं।

अखिलेश जी के कथा–साहित्य में समकालीन प्रगतिशील समाज के बदलते हुए यथार्थ की पेचीदगी और जटिलताओं को बखूबी रूप से देखा जा सकता है। इनके कथा–साहित्य में प्रगतिशील समाज की व्याख्या ही नही करती वरन् अतीत के अनुभवों को समेटकर भविष्य की उम्मीद को जीवंत भी बनाते हैं।

मैंने अखिलेश जी के कथा–साहित्य को विहंगम दृष्टि से पढ़ा एवं मेरी निर्देशिका डा0 कमलेश रवि जी ने मुझे इनके साहित्य पर शोध कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया और मैंने इनके साहित्य पर शोध पर कार्य करने का निश्चय किया। मेरे शोध का विषय **'अखिलेश के कथा–साहित्य में प्रगतिशील चेतना का अध्ययन'** निश्चित हुआ है।

प्रस्तुत शोध का उद्‌देश्य –

इस शोध का उद्‌देश्य अखिलेश के कथा–साहित्य में प्रगतिशील चेतना का अध्ययन करना एवं उसमें व्यक्त सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, आदि सन्दर्भो को विश्लेषित करने का प्रयास हैं।

'अखिलेश के कथा–साहित्य में प्रगतिशील चेतना का अध्ययन' को इस अध्ययन का केन्द्र बनाया गया हैं। अखिलेश के कथा–साहित्य में समकालीन जीवन के ज्वलन्त मुद्‌दों सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, युगीन यथार्थ एवं समाज के प्रति साहित्य एवं साहित्यिकार की प्रतिबद्धता का विश्लेषण करते हुए अखिलेश के कथा–साहित्य में निहित मूल्यों का जबर्दस्त क्षरण, सांप्रदायिक,ध्रुवीकरण, दलितों के नाम दलित विरोधी राजनीति और राजनीतिक अपराधीकरण, स्त्री–शोषण, युवाओं का राजनीति के प्रति बढ़ता आकर्षण एवं बेरोजगार युवकों के त्रासद स्थिति को उजागर किया जायेगा साथ ही अखिलेश के कथा–साहित्य में भाषा पक्ष की विलक्षणता को सामने लाया जायेगा एवं कथा–साहित्य में

शोध के द्वारा अखिलेश के समकालीन कथाकारों के विचारों को भी प्रस्तुत किया जायेगा। यही इस शोध का उद्देश्य है।

<u>अनुसंधान की प्रविधि</u> –

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य होने के कारण वह खोज करता रहता है तथा खोज के समय अनुसंधान की विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग करता है। साहित्य के क्षेत्र में शोध करते समय अनुसंधान की पद्धति का प्रयोग किया जाता है। मैंने **''अखिलेश के कथा–साहित्य में प्रगतिशील चेतना का अध्ययन''** विषय में वर्णनात्मक, विवेचनात्मक तुलनात्मक, अनुसंधान पद्धतियों का शोध के समय प्रयोग किया जायेगा साथ ही पत्र–पत्रिकाओं, लेखकों के विचार विमर्शो को भी अध्ययन का आधार बनाया जायेगा।

<u>प्रस्तुत कार्य का विवरण</u> –

अखिलेश समकालीन कथाकार हैं। मेरी दृष्टि में अभी तक इनके साहित्य पर कोई भी लघु अथवा शोध कार्य नही हुआ है।

<u>कार्य की मौलिकता</u> –

''अखिलेश के कथा–साहित्य में प्रगतिशील चेतना का अध्ययन'' पर अभी तक कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ है। मेरा यह शोध कार्य पूर्णतः मौलिक एवं नवीन हैं। शोध और समीक्षा के क्षेत्र में प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध एक विनम्र किन्तु संतुलित दृष्टि का प्रयास भर होगा। इस शोध प्रबन्ध के द्वारा एक नई दृष्टि साहित्य को देने के लिए मेरा एक नगण्य प्रयास भर होगा।

शोधार्थी

प्रीति

रूपरेखा

विषय – 'अखिलेश के कथा–साहित्य में प्रगतिशील चेतना का अध्ययन'

प्रथम अध्याय – कथाकार अखिलेश : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय– समकालीन कथा–साहित्य का विकास

क) कथा–साहित्य का स्वरूप एवं परिभाषा

ख) समकालीन कथा–साहित्य का विकास

तृतीय अध्याय – अखिलेश के कथा–साहित्य में विविध आयामों की अभिव्यक्ति

क) सामाजिक

ख) राजनीतिक

ग) आर्थिक

घ) धार्मिक एवं नैतिक पक्ष

ड) अन्य

चतुर्थ अध्याय – अखिलेश के कथा–साहित्य में भाषा एवं शिल्प

उपसंहार

(I) साक्षात्कार

(II) परिशिष्ट

(III) आधार ग्रन्थों की तालिका

(IV) सहायक ग्रन्थों की तालिका

(V) शब्द कोशों की तालिका

(VI) पत्र–पत्रिकाओं की तालिका

(VII) बेवसाइट्स

ग्रन्थानुक्रमणिका

	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	संस्करण	प्रकाशन
1)	अन्वेषण (उपन्यास)	अखिलेश	प्रथम 1992	राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली
2)	आदमी नहीं टूटता (कहानी संग्रह)	अखिलेख	प्रथम 1983	श्रवण प्रकाशन मन्दिर इलाहाबाद ।
3)	अँधेरा (कहानी संग्रह)	अखिलेश	प्रथम 2006	राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
4)	निर्वासन (उपन्यास)	अखिलेश	प्रथम 2014	राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
5)	मुक्ति (कहानी संग्रह)	अखिलेश	प्रथम 1989	साहित्य भण्डार इलाहाबाद
6)	शापग्रस्त (कहानी संग्रह)	अखिलेश	प्रथम 1997	राधाकृष्णन प्रकाशन नई दिल्ली

—: सहायक ग्रन्थों की सूची :—

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
1) कहानी की आधार शिलाएँ	डॉ0 दुर्गा शंकर मिश्र,	नवयुग कथाकार लखनऊ	
2) दस बेमिसाल कहानियाँ	अखिलेश	हार्पर कॉलिस पब्लिशर्स, इण्डिया	प्रथम 2011
3) नयी कहानी के सन्दर्भ और प्रकृति	देवी शंकर अवस्थी	राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली	प्रथम 1973
4) समकालीन साहित्यःस्वरूप और संभावनाएँ,	अखिलेश	उदय प्रकाशन, राज्य शिक्षा संस्थान कॉलौनी, इलाहाबाद	प्रथम 1980
5) समकालीन कथाकार और नई कथा कृतियाँ	गुरूचरण सिंह	संजय प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम 2007
6) प्रगतिशील उपन्यासों में समाजिक संघर्ष	डा0 ज्ञानी देवी	साहित्य सदन, गाजियाबाद	प्रथम 2005
7) समकालीन हिन्दी कहानी	डॉ0 मीनाक्षी पाहवा	के0के0 पब्लिकेशन्स, अंसारी रोड़, नई दिल्ली	प्रथम 2007
8) साहित्य विधाऐं	डॉ0 शशिभूषण सिंघल	आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली	
9) साठोत्तरी हिन्दी कहानी और राजनैतिक चेतना	डॉ0 जितेन्द्र वत्स	साहित्य रचना, कानुपर	
10)हिन्दी कहानी प्रक्रिया और पाठ	सुरेन्द्र चौधरी	राधाकृष्ण प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली	प्रथम 2011

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
11) हिन्दी साहित्य का इतिहास	आचार्य रामचन्द शुक्ल	कमल प्रकाशन, नई दिल्ली	
12) हिन्दी उपन्यास का विकास	मधुरेश	सुमित प्रकाशन इलाहाबाद,	प्रथम 1996
13)हिन्दी कहानी का विकास	मधुरेश	सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद	प्रथम 1996
14) हिन्दी के प्रगतिशील और समकालीन कवि	डॉ. रणजीत	साहित्य रत्नालय, गिलिस बाजार कानपुर	प्रथम 2007
15) हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास	डॉ.लक्ष्मी नारायणलाल	साहित्य भारती प्रकाशन कृष्णा नगर, दिल्ली	प्रथम 1967
16) हिन्दी कहानी ;स्वरूप विकास और प्रतिनिधि कहानीकार	प्रकाश दीक्षित	विनोद पुस्तक मंदिर हॉस्पीटल रोड, आगरा	प्रथम 1960
17) हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना	डा.लाल साहब सिंह	नमन प्रकाशन नई दिल्ली	प्रथम 1998
18) बदलते परिपेक्ष्य और हिन्दी उपन्यास	डा. बीना जैन	संजय प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम 2006
19) हिन्दी आलोचना और आज की कहानी	डा. विशम्भर नाथ	रंगमंच वाणी प्रकाशन नई दिल्ली	–
20)हिन्दी कहानी के बदलते प्रतिमान	डा0 रघुवर दयाल वार्ष्णेय	वाणी प्रकाशन नई दिल्ली	–